लेखक-परिचय :

नाम : नरेन

जनम-तिथि : 1.1.1959

जनम-अस्थान : मैदरा, पो०-मधार (वेन), नालंदा

आवास : प्रतिभा निवास, तारकेश्वर पथ, चिरैयाँटाँड़, पटना

मेहुदायल बुल्लेट प्रसिद्ध कहानीकार नरेन के एगो मगही के प्रतिनिधि कहानी हे। ई कहानी में बतावल गेल हे कि समाज में गरीबगुरबा के जे सोसन हो रहल हे, ओकर जवाब देवे ला गरीब गुरबा एक जुट हो गेलन हे। अप्पन जान परान दे के ऊ अन्याय के विरोध करेला बमगोला बन गेलन हे। बुल्लेट के जवाब कहाँ के नाल से कइसे देल जा सकऽ हे, ओकर एगो जथार्थ चित्रन कयल गेल हे। जमीन्दारी समाप्त हो गेल हे, तइयो सामंती सोसन बरकरार हे जेकरा खिलाफ सोसित समाज जाग चुकल हे आउ बुल्लेट के जवाब बुल्लेट से देवेला तैयार हो गेल हे। जेकरा अब ''नक्सलाइट'' सबद से संबोधित करल जा हे।

मेहुदायल बुल्लेट

'अरे ठहर रे तेरी तेरहिया के रे अमिकवाऽऽऽ असल बाप के जलमल हें.....तऽ रैन छोड़ के भागिहें नंय रे सार'ऽऽऽ'' अप्पन धोती के कच्छा जइसन समेट के लंगोट नियन चुस्ती से समेटले अप्पन हाथ में मुण्डा नियन लहरइते देसी माने हाथ के बनावल रैफल लेले ढकनियाँ पोखर में बनल बाँध पर फुर्ती से चीता जइसन छलाँग मार के कुदलक हल रघुआ। उछाह में, चाहे दिनभर बैसक्खा के रउदा में पकल लबनी से पुनपुन्ना के उफनायल-फेनायल ताड़ी नियन जोस के नीसा में सायद ऊ अप्पन जाँघ के बड़गर गो, पीव से टभकइत अँखमुन्ना फोड़ा के बार-बार नरहन्नी चलावे जइसन उपजे वाला टीस के एकदम्मे से भुला बइठल हल। आँख झपकइते-झपकइते देसी बंदूक आउ राइफल हाथ में लेले पच्चीस-तीस गो पाटी के नौजवान लड़ाका सब हनहना के ढकनियाँ पोखर में उतरले चल गेल हल और सगरो छितरैते चल गेल हल घैला में से निकल के भुइयाँ में गिर के छितरा जाय वाला केराव के दाना नियन.....!

एतना दिलेरी ? हद हइ भाय ई तो

"राइफल से कोई अदमी गोली नंयँ चलायेगा....घोलट जायेगा सब साला लोग अइसहीं.....एस्पौट पर लहास नंय गिरे के चाही साथी.....ई बात का पूरा खयाल रहे भाय।" देखे में गाय जइसन एकदम सुद्धा लगे वाला उमेस जी के ऊ घड़ी पहचानना एकदम मुस्किल हल। मेघनाद जइसन खनखनाहट से भरल एकदम बड़बड़ैत अवाज में ऊ हुकुम देलन हल ढकनियाँ पोखर में छितरायल सब जवान के। उनकर हाथमें दुनाली चेकोस्लोवाकियन बंदूक हल। जाने वाला लोग के ई बात के पता हल कि करैत साँप जइसन कौंध मारइत उनकर खूब सुत्थर दुनाली बंदूक के एगो नाल में हमेसा एलीनॉक बुल्लेट आउ दुसरका नाल में छो नम्बर छर्रा भरल रहल करऽ हल।

पहिला फैर अमिकवा पर दिनेसे जी कइलथिन हल। सायद छौ नम्बर छर्रा से ही। हुर्रर्र सा ढेर मनी छर्रा बरस गेल हल अमिकवा पर आउ ढकनियाँ पोखर में कम्मर भर पानी में खड़ा अप्पन दुन्नो हाथ में बड़का-बड़का गो बोवारी मछली धइले, करिया-भुजंग अरना भैंसा जइसन अँधरायल उनकर दुन्नू भाड़ा के टट्टुअन पर।

सायद सपना में भी नयँ सोचलक होवत अमिकवा कि ओकर परताप के सामना करे खातिर ई सब लंगटवन सब कोय दिन अप्पन माथा उठावे के हिम्मत भी कर सकऽ हे। अप्पन ललाट आउ बाँह पर से टपकइत खून के धार के पोछते-पोछते ऊ गिरते-बजड़ते भाग खड़ा होल अप्पन घर दन्ने। अपना ऊपर तनल पच्चीस-तीस नाल बंदूक-रैफल के जवाब में ओकर कम्मर में खोंसल चीनी रिवाल्वर खोंसल के खोंसले रह गेल। ओकर पीछे-पीछे ही लाल लंगोटधारी ओकर दुन्नो भाड़ा के टट्टू भी बोवारी मछलियन के फिर से पनिये में ही फेंकते-फाँकते पोखरिया से भाग निकलल।

एक जमाना हल, जब एक्के गो दिलेर नौजवान मुसलमान के बाहूबल से अरजल ई जमींदारी के इलाका में उनकर ही लट-जट; जइसे बडे मियाँ जइसन समुच्चा इलाका में खिस्सा-कहानी के नायक बन गेल जमींदरवन के पेसाब से चिराग जलल करऽ हल। ऊ जमाना में दस एकड़ के ई ढकनियाँ पोखर पर उनकर

नया–नया पैसा के मुँह देखे वाला, सर्वे–सेटलमेंट विभाग में काम करे वाला एगो घूसखोर बाप के बिगड़ैल बेटा हल, जेकरा ईमानदारी से मेहनत–मसक्कत करके कमाय–धमाय से कोय मतलब न हल। ऊ भइँस पर चढ़ तिकड़म कर के पंचायत के चुनाव में उप–मुखिया भी बन गेल हल लेकिन सरेआम अप्पन घर में महुआ के दारू चुआ के बेचे में और नजायज हथियार के धंधा करे में ओकरा कोय लाज–गिरान न हल।

ई बात सुने में जरा अटपटा लग सकऽ हे, लेकिन जहिया से एगो कुटम्ब मंत्री बनलन हल तहिया से अमिकवा के मिजाज धनखेती के ढैचा जइसन बढ़ गेल हल। हालाँकि ओकरा राजनीति–फाजनीति से कोय लेना देना नंय हल। अमिकवा दू–चार गो चेला–चुटटी–पाल के आउ मसता गेल। ओक्कर मन जेठ के दुपहरिया नियन धीप के धधक गेल तब दस एकड़ वाला ई ढकनियाँ पोखर पर मँछली फँसावे वाला बंसी नियन ओक्कर निगाह गड़ गेल। बंदूक के नोक पर रोपलक–डोभलक ऊ तीन–चार बरिस तक पोखरिया के। तरखा–गहिरा के हिसाब से अगहन में सैकड़ो मन धान काटलक, चैत–बैसाख में सैकड़ो मन गेहूँ काटलक आउ जेठ बीतते–बीतते सैकड़ो मन पियाज उपजयलक। ऊपरझझ लाभ ई भेल कि पोखरिया के गरहिया में बरसाती पानी सेंगर जाय से सौ–डेढ़ सौ मन से कम मछली नंय मरा हल ओकरा में।

फोकट में तर गेल अमिकवा ऊ ढकनिया पोखर के हथिया के।

मनबढ़ू ऊ अइसन हो गेल हल कि अपना आप के ऊ ई महल्ला के जमींदारे समझ बइठलक हल। ओकर सतावल ढेर अदमी में से एगो रघुनथवा भी हल। बेचारा गरीब सब्जी उपजावेवला अप्पन माथा पर दौरी ले के, बिना कोई खास पूँजी पगहा के, फल–फलहरी के दिन में बिहारशरीफ से फल ला के, नंय तो अप्पन मेहनत के बदौलत अप्पन दूरा भिर जमीन में सालो भर तर–तरकारी बेच के बाल–बुतरू के गुजर बसर कर रहल हल। ढेर सा उधारी चढ़ गेल हल रघुनथवा के अमिकवा पर। ऊ बेचारा डर के तगादा ही नय करे कहियो। लेकिन बड़ी दिन बाद, बड़ी हिम्मत जुटा के अचानक घिघियइते–घिघियइते एक बार टोक देलक हल अमिकवा के पैसा खातिर हौले से। कि मानो ऊ गेहुँअन साँप के पुच्छी पर गोर रख

सब के ही मलिकाना हक हल। ऊ जमाना में दस एकड़ के ई मछली के नीलामी तो नंय होल करऽ हल लेकिन पता नंय कब से ई परंपरा बन गेल हल कि नीमन-नीमन मछलियन के सब्भे जमींदरवन के घर में पहुँचा देल जाये। बचल-खुचल इँचना-चेल्हक्कड़, पोठी-धंधोरी या जादे से जादे गरई जइसन मछलियन ही नेमांन होवऽ हल बाकी गाँव वालन के। गाँव वालन सब ऊ सब जमींदारन के ही तो परजा हलन, जिनकर पुरखन के उनकर पुरखन कहीं-कहीं से ला के, जमीन दे दे के अप्पन खेत-खरिहान में कमिया-मजूरी करे खातिर बसयलन हल। फागुन-चैत-बैसाख में पानी कम हो जाये से जब ढकनियाँ पोखर के ताखर तलहट्टी उपछा जा हल, तब ओकरा जोत-कोड़ के सौंसे गाँव वालन, पियाज, बैंगन, ककड़ी-खीरा, परोर-कद्दू के खेती करऽ हल। आधा पियाज-साग-सब्जी जमींदरवन के यहाँ आउ आधा अप्पन-अप्पन घर। एही दस्तूर हल ढकनियाँ पोखर के।

केक्कर राज पाट भला हमेसा बसल रहल हे से सावन के फफूंदी के नीचे रखल मट्टी के ढेला जइसन बिला गेल धीरे-धीरे जमींदारी। गाँव के एकदम उत्तरवारी सीमाना पर मलिकवन के ड्योढ़ी वाला गल्ली से कभी कोय अदमी गोर में चमरउँधा पहिनले आउ माथा पर पगड़ी बाँधले सीना तान के गुजर जाय के हिम्मत नंय करऽ हल, अब ओही गल्ली में गाय-गोरू, मुसहर के सूअर आउ अवारा कुत्ता सब मंडरैते फिरे लगल अप्पन मस्ती में। न कोये रोके वाला, नंय टोके वाला! जमींदार के खनदान के ज्यादातर अदमी या तो पाकिस्तान चल गेल या फिन जे बचल-खुचल रह गेल हल गरीब-गुरबा मुसलमान, ऊ बगल में बड़का को एगो मुसलमान-गाँव में जौर हो के जा बसल या फिर बिहारशरीफ में जा बसल। मुसलमानन के गाँव छोड़ के चल जाये से ढकनियाँ पोखर पर से ऊ सब के दबदबा खतम हो गेल। अब ऊ आम गरमजरुआ पोखर हो के रह गेल हल। ई सुने में जरी अजीब लग सकऽ हे लेकिन गाँव के ई मुसलमानन के नाता हिआँ के मियाँ लोग के बड़का गो कबरिस्तान में मुर्दा गाड़े खातिर जनाजा ले के आवे भर रह गेल हल।

यही हल कुल सीन। फिर फरेम में घुस आवऽ हे अमिकवा।

देलके हल। गाँव भर के अदमी के सामने नचा-नचा के अमिकवा रघुनाथ कुसवाहा के एतना मारलक हल कि ऊ बेचारा के धोतिये में फाड़ा हो गेल हल आउ ओक्कर सामने वाला तीनचार गो दाँत भी टूट गेल हल।

ठीक एही सब दिन में बगल के गाँव के, कोलियरी के कौनो कौलेज में पढ़ावे वाला पोरफेसर साहेब आउ बंगाल में रहेवाला आउ अखबार-पतरिका में लिखे-पढ़े वाला एगो नौजवान लौट के आयल हल गाँव में। माल-मुसहर आउर खेत में काम करेवाला जन-मजूरा के ले के मीटिंग कयलक हल ई दुन्नो दू-चार रोज आउ एक रोज गांव में बैठका के रूप में मानल जाय वाला झमठगर नीम के गाछ तर बड़का भारी-मीटिंग बोलयलक हल। लाल झंडा टाँगले, हवा में मुट्ठी उछाल-उछाल के नारा लगइते-लगइते पास-पड़ोस के कइएक गाँव के ढेर सा कामगार लोग सब मीटिंग में सामिल भेलन हल। आज तो ऊ दिन के बात याद करके सब्भे के हँसी आवऽ हे कि कइसे पुरनका लाल झंडा टांगे वाला, बलौक के दलाल तुलसिया माँझी के जरिये पहले से सिखा-पढ़ा देवे के कारण, झंडा ले-लेके जुलूस बना के मिटिंग में आवे वाला कामरेडवन के देख के सब्भे मुसहरवन छरकट्टे भाग खड़ा होल हल, ''धुत्तेरी के रे.....ई सब तो नौ इंची छोटा कर देवे वाला नक्सलैटवन सब हौ रे.....'' लेह बलइया....चलल, जाए बढ़ल .... भागल-भागल पछियारी अहरा के अलंग पर।

लेकिन सल्ले-सल्ले सब कमिया-मजूर, गरीब-गुरबा ई जान गेल हल एकाध महिन्ना में कि पढ़ल-लिखल नीमन-नीमन घर के लइकन सब ऊ सब के झोपड़ियन में आ-आ के ओही सब के दुःख -मोसीबत दूर करे के बात बतियाइत जा हे।

धीरे-धीरे गाँव के गरीब-गुरबा, खास कर के दब्बल-कुचलल, पिछड़ल जात के कमिया-मजूरा सब के ले के गाँव में पार्टी के इकाई गठित हो गेल। राधेस्याम भारी तड़पियाँक आउ जुआरी हल। ओकरो भी का दिमाग में आयल कि ऊ भी पार्टी में ढुक गेल आउ रात भर बंदूक कंधा पर टाँग के गाँव में पहरा देवे वाला 'ग्राम रच्छा दल' के मुखिया बन गेल। भभुतिया भारी डकैत हल। ओहू पार्टी में आ गेल। सब के देखा-देखी रघुनथवा भी भिड़ गेल पार्टी में। ऊ सुनलक हल कि अन्याय के मुँह तोड़ जवाब देवेवाला बिन जात-पात के पार्टी बनल हे ई। बेगर

कसूर के अमिकवा से मार खयलक हल। सामने एक्कर बदला लेवे पड़त। अमिकवा लुच्चा के जमींदारी में रह रहली हे का ? रघुनथवा तैस में आ के सोचलक।

महेस जी पार्टी के तरफ से गाँव में बाद में भेजल गेलथिन हल। ओक्कर पहिले गाँव में अइलथिन हल जनार्दन जी। उनखा से जरा सा उनैस-बीस हो गेल हल, जेकरा वजह से पार्टी उनकर जगह पर महेस जी के भेजलक हल। जनार्दन जी से दूगो गलती भेल हल। एगो तो ई कि गाँव के अदमी सब चंदा जुटा के उनखा जब ग्राम रच्छा दल के पहरा देवे खातिर रैफल खरीदे ला पइसा देलक हल तऽ ऊ पार्टी के खातिर रैफल नंय खरीद के दूसर गाँव के रच्छा दल वाला रैफल उधार माँग के ला के देके हिंया के अदमी के मरवा देलन हल। बात जब खुल गेल हल, पार्टी के तरफ से उनखा पर ही ऐक्सन ले लेल गेल हल। लेकिन ई ऐक्सन के बात गाँव वाला जाने, ओकर पहिले ही ऊ गुहन माँझी के जवान-सुघ्घड़ बेटी के साथ पता नंय कन्ने गायब हो गेलन हल। किसिम-किसिम के बात डेढ़-कउआ जइसन गाँव-जवार में अप्पन डैना फड़फड़इते उड़े लगल हल। कोई कहे कि पार्टी के तरफ से जनार्दन जी के गोली मार देल गेल होवत। पुरनका लाल झंडा पार्टी के छुटभइया नेता तुलसिया माँझी अप्पन ठोर बिदोर के फोरन छौंकलक हल, "ई सब नयकन क्रांतिकरियन के लच्छन देखल जाय हो भाई जी.....करांती करते-करते तोर बेटिये के ले भागतो। जरी होसियार रहिहऽ।"

लेकिन ई महेस जी ठीक-ठाक किसिम के आदमी हलन। गौ नियन सुद्धा। केकरो साथ कोनो भेदभाव नंय। जहाँ भूख लगल आउ सामने थरिया में जे कुछ परसा गेल, केकरो दुआरी पर; ऊ जेम लेलन। जहाँ पइलन, सूत रहलन।

अब गाँव में किसिम-किसिम के अदमी-मानुस आव-जाये लगल आउ रैफल-बंदूक के नाल चमके लगल घड़ी-घड़ी। अमिकवा मरखंड साँढ़ जइसन हंकड़ल करे दूरे से, "लंगटवन के हाथ में बंदूक।"

अमिकवा के ई घमंड भरल बात सुन-सुन के रघुनाथ के साथे-साथे आउ भी ढेर मनी लतमरुअन दीन-दुखिया, कमिया मजूरा के आँख के कोर से खून छलछला जा हल। ऊ सब आपस में राय विचार करके सोचल करे, "ठहर जो बेट्टा, कहियो न कहियो तो आँट में आइबे करबऽ, तोरा पता चलतउ।"

जमीन!

ढकनिया पोखर के गैर मजरुआ जमीन!

पार्टी के तरफ से एकरे अखाड़ा बनावे के पलान बनावल गेल मनबढ़ू अमिकवा के नाथे ला। साथ ही साथ एक-एक मुट्ठी काँस के फूल जइसन उज्जर आउ हल्लुक सपना भी बाँटल गेल हल कमिया-मजूरा के बीच में; कि ढकनिया पोखर के जमीन के, जरूरत पड़े, तऽ बंदूक के नोक पर छीन लेल जात जबरदस्ती अमिकवा के कब्जा से आउ ओही सब मजुरवन के बीच एकरा बाँट देल जात। एतना मनी जमीन? बसमतिया धान के गाभा जइसन फुलायल-गभिनायल सपना हौले-हौले मचले लगल हल सब्भे के अँखियन में।

गाँव से जरा हट के भराव पर, बसावन पीड़ी के खंधा में आउ चंदा पर के बबुरबन्ना में अँधरिया-इँजोरिया रात में नयँ जानू केतना बार मीटिंग-सीटिंग होल आउ ई तय पावल गेल कि पोखरिया में मछली मारे के घड़ी ही अप्पन ताकत देखा देल जात अमिकवा के।

आउ मछलिये मराय घड़ी पलान बना के घेर लेवल गेल हल अमिकवा के ओक्कर चेला-चुटरिन के संघे। गोली चलल हल आउ अप्पन खून चुअइते-चुअइते भाग खड़ा होल हल अमिकवा। एन्ने आड़ी-अलंग के पीछे पेटकुनिए पड़ल, हाथ में के रैफल-बंदूक सोफिअइले पार्टी वाला लोग अमिकवा आउ ओकर गैंग के इंतजारे करते रह गेल हल आउ ऊ ओन्ने खटोली पर लदा के सिलाव थाना जा पहुँचल हल खून से रँगायल-पोतायल।

पार्टी वाला कामरेड सब कंधा पर बंदूक टाँगले परेड करलक हल सौंसे गाँव के चारो पट्टी घूम-घूम के फिर घुरनिया पीपर तर लैन लगा के अप्पन-अप्पन रैफेल-बेंदूक के नाल आसमान दन्ने सोझिया के फैर करते गेल हल "अऽर्ऽऽ.....गुडुम ! फिन सोझियागेल हल सब्भे जवान पछियारी अहरा दन्ने।

गाँव भर के अदमी सब देखलक हल अप्पन-अप्पन आँख में तनी डर आउ तनी हौसला लेले ई परेड आउ चाँदमारी के।

एकर दुइये-चार रोज के बाद से जे चूहा-बिल्ली के घेरा-घेरी छीना-झपटी, धर-पकड़ के खेला सुरू भेल थाना आउ गाँव में पार्टी-पोलिटिक्स करे वाला

अदमी लोग के साथ कि गाँव के सब्भे जवान-जहान अदमी सब अप्पन-अप्पन घर छोड़ के दल बाँध के खेत-खंधा में सूते लगल हल। पार्टी वालन के डर से अमिकवो के भी गाँव छूट गेल हल।

गाँव-घर से दूर भागते-दौड़ते रघुनथवा के मुँह में भी फेफरी पड़ गेल हल। ओकर ढउआ-ढनमन घर के भी कुर्की जप्ती हो गेल हल। आखिर काकरे अकबकायल रघुनथवा। ओकर मेहरारू आउ लइकन-बुतरुन सब ओही टोला में रह गेल हल, जेकरा में अमिकवा के घर हल। हिम्मते नय पड़े ओकरा अप्पन लड़का-बुतरू से मिले जायेला। ओकर परान छछन गेल हल एकदम से। लुटल-पिटल जइसन ऊ उमेस जी के मुँह टुकुर-टुकुर देखे। हर बार के तरह ओकरा एही सुनें ला मिलऽ हल उमेस जी से, "का कामरेड, भला हिम्मत हारे से काम चलतइ। आँय? थाना-पुलिस हो गेल, तऽ मन कड़र करके ओकर सामना करे के चाही न? कीमत तो सब्भे कुछ के चुकावे पड़ता है न ! भला फोकट में कौनो चीज मिलऽ हे का? का करल जाय, बोलऽ? आउ फिन खाली हिंये के ही प्रोब्लम थोड़े न हे पार्टी के पास? अब तो पार्टी खुल्ला में आ गेल हे आउ चुनाव भी लड़े लगल हे। ई भरस्ट सरकार के एकदम से हरा देवे के है, एकदम सामंती चरित्तर का है। चुनाव जीते खातिर तालमेल बइठाना कौनो मामूली बात है का ? आँय ?"

रघुनथवा बेचारा मोटका-मोटका लाल किताब नयँ कंठस्थ कयलक हल। ऊ तो रोज अप्पन माथा पर टोकरी रख के फल-फलहरी, तर-तरकारी बेचेवाला एगो अदना सा रोजी कमाय-खाय वाला अदमी हल। फिर भी ऊ सब दिन के नयँ भुलायल हल जब सुख-सुख के दिन में पार्टी के लीडर लोग गाँव में आ-आ के रात-दिन मीटिंग करते रहते जा हल आउ खूब जोर दे के बोलल करऽ हल, "हमको सत्ता से कुर्सी से कोय लेना-देना नयँ है। संसद तो एक ठो सड़ाँध फेकता मूत्रालय है। वहाँ हम आपके सपनों को साकार करने के लिये एक मुहिम छेड़ना चाहते हैं....हमको आपसे, आपकी समस्याओं से सरोकार है। हक और इज्जत हासिल करने का लड़ाई लड़ना जरूरी है.....हमलोग साथ जीयेंगे-साथ मरेंगे....."

"एतना सोचे में का मगन हैं कामरेड! चुनाव के तारीख के घोसना हो गया है...ई बार चुनाव लड़े खतिर....." उमेस जी के बात बिच्चे में ही काट देलक

फौंझिया के रघुनथवा, "साथी, हमको चुनाव-फुनाव नयँ सोहाता है। आज घरे जाये खातिर परान बड़ी छछन रहा है। गाँवें के आस-पास मंडराते रहते हैं.....बाकि बाल-बुतरुन का सूरत देखला महीनों हो गया है.....हमको मेहरारू खबर भेजाइस है कि गोदिल्लवा बेटी के कै रोज से कस के बोखार लगल है। बोखार टुटबे नंय करता है.....आज तनी घरे जाये का मन है.....।"

तनी देर उमेस जी अवाक् हो गेलन। रघुनथवा के गौर से देखलन, कहलन—"तऽ जाइए न, हो आइए न।"

"कइसे हो अइअइ साथी।" बुझा रहल दीया जइसन कुछ धुआंये लगल रघुनथवा के आँख में "अमिकवा के मुपवा वाला सब के मन-मिजाज बेहिसाब बढ़ गेल हे। हमरा ई धरती पर से उठा लेवे खातिर ऊ कहिया से नंय हमरा ऊपर दाँत गड़यले हे। अप्पन घरे जाये खातिर हमरा ओकरे टोला मेंहे न जाये के पड़त।"

उमेस जी आँख में सवाल ले-ले रघुनथवा के देखलन।

"कुछ बंदोबस्त....." रघुनथवा अप्पन दाहिना हाथ के आगे बढ़ा के अप्पन तर्जनी मोड़ के लचकइते-लचकइते अइसन देखइलक मानो ऊ कोय बंदूक के घोड़ा दबा रहल हल।

"अच्छा-अच्छा, बूझ गेलियो....'समान' चाही तोहरा?" पालथी मार के बइठल उमेस जी उठलन आउ मड़इया के फूस के छान में खोंस के रखल बारह बोर वाला देसी नलकट्टी पिस्तौल निकाल के रघुनथवा के दे देलन।

रघुनथवा बेचारा के मन बुझा गेल।

ऊ जंगायल नाल वाला अनगढ़ पिस्तौल के देखलक।

नीला कौंध मारे वाला हथियार के हाथ में पकड़ के मनवा में हजारों सूरज के रोसनी जइसन जे विस्फोट होवऽ हे, ओइसन कुछ भेल रघुआ के मन में। रघुआ के लगल मानो रैन में जाये के पहिले ओकरा कोय अरउआ थमा देलक हल।

उमेस जी बारह बोर बाला कुछ गोली दे रहलन हल ओकरा।

दीया के छुआँइत, मरियल जइसन ललछौंह रोसनी में रघुनथवा गौर से देखलक ऊ गोलियन के। अप्पन चमक भुलायल गोली के खोल में फायर करे के बाद फिर से 'हथौकी भरल दाना' हल ई पाँच गो।

जब्हा होवत बकरा जइसन घिघियायल रघुनथवा, "साथी, ई सब तो फिर से भरलका दाना हे।"

उमेस जी अप्पन आवाज में फिर से विस्वास भर के बोललन, "अरे, तऽ का होलय साथी। एतना फिकिर काहे ला कर रहलऽ हे। तू तो अप्पन घरवे न जा रहलऽ हे.....। कौनौ एनकाउंटर करे थोड़िये न जा रहलऽ हे। सामने चुनाव हय। निमनका बुलेटवन सब सहेज के रखे पड़तइ न! जा, हो आवऽ घरे से। मेहरारू-बुतरून से भेंट मुलाकात कर आवऽ"

पता नयँ कइसे, कुछ आगरो हो गेल रघुनथवा के। ओकर मन अंदेसा से भर गेल आठ डूबे लगल। ऊ मड़ैया के कोना में चमकदार नीला कौंध फेकइत दुनाली विदेसी बंदूक के तरफ भुखायल आँख से देखलक, फिन बेबसी से अप्पन हाथ में लेले फिन से भरलका गोलियन के देखे लगल.....।

ई फिर से भरलका बुल्लेट।

मुठभेड के घड़ी में न जाने केतना बार जान साँसत में डाल चुकल हे ई। हाँ, ई सच बात हे कि एगो बढ़िया असली बुल्लेट कीमती होवऽ हे आज एकदम दुस्मन के सीना में मौत उतार देवे जइसन कार्रवाई में ओकर उपयोग करल जा हे खाली अवाज करे खातिर नयँ।

रघुनथवा के घरे जाये के सब उत्साह के पाला मार देलक।

अँधरिया रात वाला साँझ गहरा चलल हल।

सुनसान गली।

एही गली रघुनथवा के खंडहर बन गेल घर तक जा हल, जेकर ओसारा में टूअर-टापर ओकर बाल-बुतरू के संग ओकर घरवाली पड़ल-पड़ल ओकर बाट जोहते-जोहते थक गेल हल।

अप्पन कमर में नलकट्टी पिस्तौल खोंसले, धुकुर-पुकुर मिजाज' के साथ बढ़ल जा रहल हल ऊ अप्पन घर दन्ने।

अचानक गली के मोड़ पर टौर्च के खूब चमकदार रोसनी भुभकल। नेहा गेल रघुआ रोसनी में।

कड़कदार आवाज गूँजल, "के है?....के है हुआँ पर? अरे? अरे ई तो रघुनथवा हे जमादार साहेब! आज घेरैलो हे.....अरे दौड़िहंऽऽऽ होऽऽऽ भागे नंय पावे ....छेकले.....आज बेट्टा, हाथ से जाय न पाये.....!"

गली के सांति गरीब के इज्जत जइसन छितरा गेल।

थाना से दू गो सिपाही जी के साथ एकगो केस के छानबीन करे खातिर ई इलाका में आज जमादार साहेब अइलन हल। साम ढल जाये के कारन अइसन खतरनाक इलाका में रात के अंधेरा में घूमना मुनासिब नयँ समझ के ऊ पूरा अधिकार के साथ अमिकवा के दुआरी पर डँट गेलन हल। अमिकवा भी अइसने मौका ताड़ के गाँव दन्ने सोझियायल हल, जब पुलिसियन के बूट के धमक से इलाका गूँजल करऽ हल। ओकरा लगऽ होवत कि बीच-बीच में तनि गाँव में घूम-टहल के हँकड़ना, तनिमनी फूँ-फाँ करना बंद कर देवे से ओकर रहल-सहल धाक-दौरा भी खतम हो जात इलाका से। अभी ऊ जमादार साहेब के दिसा-फरागत करावे ला निकलल हल तनिक अँधेरा हो जाये के बाद।

रघुनथवा के छठी इन्द्री तुरते अगाह कर देलक कि आज ऊ बुरी तरह फँस गेल हे। तुरते ओकरा समझ में आ गेल कि गली में ऊ जौन जगह पर घेरा गेल हे, हुआँ से जान बचा के निकल पाना एकदम मुस्किल है।

ऊ फुर्ती से कमर के फेंटा में खोंसल पिस्तौल निकासलक आउ ओकरा लोड कयलक।

"छेंक-छेंक, निकले नयँ दीहें होऽऽऽ!"

भाग-दौड़!

घेर-घार

हल्ला-गुल्ला!

गली के मोड़ पर एक बार फिर टार्च के रोसनी चमकल। अमिकवा के बगल में एगो सिपाही ठेहुनिया देले, अप्पन घुटना पर अप्पन केहुनी टिका के राइफल के निसाना साध रहल हल।

रघुनथवा अप्पन दुन्नो हाथ से सिपाही आउ अमिक दन्ने पिस्तौल साध के निसाना साध के घोड़ा दबा देलक।

खटाक!

फायर नयँ होल.....

हाय रे बाप! मेहुदा गेल हे का ई बुलेटवा? आ कि फिर से भरलका बुलेटवा धोखा दे दिहिस.....।

ऊ जल्दी से पिस्तौल खोललक आउ अप्पन हाथ के तलहत्थी में ठोके लगल।

छन भर में ही ओकर आँख के सामने ओकर बाल बुतरू के, मेहरारू के कुम्हलायल चेहरा....नाता-रिस्तेदार के बात, दुनिया-जहान के बात सर्र से नाच गेल।

सब खतम!

ओकर मन के तलहट्टी में से अकास फाड़े वाला गड़गड़ाहट के साथ लावा उगलइत ज्वालामुखी धुँआयत-धुँआयत बलबला के फूट पड़ल। घना अंधियारा में भी ओकर चेहरा घिन, गुस्सा, अपमान आउ हार जाये के हतासा के मिलल-जुलल भाव से लकवा मारल मरीज के मुँह जइसन टेढ़ा हो गेल।

"ओही है.....ओही है सिपाही जी.....।"

"फैर कीजिये.....जल्दी से फैर कीजिये! गोहमन्ना साँप के पोवा है ई सार.....बच के निकस जायेगा, त ई सब्बे के डँस लेगा.....का कर रहे हैं सिपाही जी?"

जमीन पर ठेहुनियां दे के बइठल अप्पन ठेहुना पर केहुनी टिका के गली में फँसल रघुनथवा पर रैफल के निसाना साध के सिपहिया अप्पन जबड़ा भींचइत रैफल के घोड़ा दबा देलक.....।'

अभ्यास-प्रस्न

मौखिक :

1. की लेके आउ कहाँ से कुदलक हल रघुनथवा?
2. उमेस जी अप्पन लड़ाकू टीम के का कहलन?

3. पहिला फायर केकरा पर आउ कौन चीज से कयल गेल?
4. जमीन्दार जुग में रोब कइसे गाँठल जा हल?
5. आम गरमजरुआ पोखर के मतलब का हे?
6. अंबिका प्रसाद कउन हल आउ ओकर करामात का हल?
7. ढकनिया पोखर के के हंथिऔलक आ ओकरा का लाभ भेल?
8. रघुनाथ के साथे के अत्याचार कयलक आ ओकर का हाल भेल?
9. नक्सलाइट केकरा कहल गेल हे? ऊ लोग कउन चीज ला लड़ाई लड़ रहलन हल ?
10. खून से रँगायल-पोतायल सिलाव थाना पर के पहुँचल आउ कइसे?
11. रघुनथवा के घर खंडहर काहे बन गेल?
12. 'बुल्लेट' कइसे धोखा देलक?

लिखित:

1. कहानी के नायक के चरित्र-चित्रन करऽ।
2. कहानी के खलनायक के चरित्र-चित्रन करऽ।
3. कहानी में कुछ सहायक पात्र के नाम आयल हे। उनका बारे में पाँच वाक्य में जवाब दऽ ।
4. कहानी के कउन-कउन तत्व हे। ओकरा अधार पर मेहुदायल बुल्लेट कहानी के समिच्छा लिखऽ।
5. कहानी में एगो संघर्स बतावल गेल हे। ओकर बरनन करऽ।
6. सामंतवादी आउ जमीन्दारी सोसन कहानी में चित्रित भेल हे। ओकरा अप्पन सबद में लिखऽ।
7. आज के गाँव बेचारा बनल हे। काहे?
8. नीचे लिखल गद्यांस के सप्रसंग व्याख्या करऽ।

(क) नया नया पैसा के मुँह देखेवाला, सर्वेसेटलमेंट विभाग में काम करेवाला एगो घूसखोर बाप के बिगड़ैल बेटा हल जेकरा ईमानदारी से मेहनत मसक्कत करके कमाय-धमाय से कोई मतलब न हल।

(ख) बसमतिया धान के गाभा जइसन फुलायल गभिनायल सपना हौले-हौले मचले लगल हल सब के अँखियन में।

भासा-अध्ययन

1. कहानी में आयल पाँच बिसेसन चुन के लिखऽ।
2. कहानी में आयल पाँच प्रत्यय आ पाँच उपसर्ग लिखऽ।
3. कहानी में आयल मुहावरा चुन के लिखऽ आ वाक्य में परयोग करऽ।
4. कहानी में आयल तत्सम सबद बतावऽ।
5. कहानी में कुछ बिंब आयल हे. तोरा समझ से कौन अच्छा बिंब हे लिखऽ।
6. कहानी के पाँच ठेठ मगही सबद से वाक्य बनावऽ।
7. कहानी में से एगो लच्छना आउ एगो व्यंजना सबदसक्ति चुन के बतावऽ।

योग्यता-विस्तार

1. समाज के संघर्स पर एगो लेख प्रतियोगिता के आयोजन करऽ।
2. कहानी से मिलइत-जुलइत एगो आउ कहानी चुन के लावऽ आउ इस्कूल में आयोजित कहानी पाठ कार्जक्रम में पाठ करऽ।
3. नक्सलाइट पर पच्छ-विपच्छ में कलास में एगो गोस्ठी के आयोजन करऽ।

●